

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री सूक्तं स्तोत्र पाठ

भाग्योदय हेतु श्रीमहा-लक्ष्मी-साधना

भाग्योदय हेतु श्रीमहा-लक्ष्मी की तीन मास की सरल, व्यय रहित साधना है। यह साधना कभी भी ब्राह्म मुहूर्त पर प्रारम्भ की जा सकती है। 'दीपावली' जैसे महापर्व पर यदि यह प्रारम्भ की जाए, तो अति उत्तम 'साधना' हेतु सर्व-प्रथम स्नान आदि के बाद यथा-शक्ति (कम-से-कम १०८ बार) "ॐ ह्रीं सूर्याय नमः" मन्त्र का जप करें। फिर 'पूहा-स्थान' में कुल-देवताओं का पूजन कर भगवती श्रीमहा-लक्ष्मी के यन्त्र या मूर्ति का पूजन करें। पूजन में 'कुंकुम' और सफ़ेद चन्दन महत्त्वपूर्ण है, इसे अवश्य चढ़ाए।

पूजन के पश्चात् माँ की कृपा-प्राप्ति हेतु मन-ही-मन 'संकल्प करें। फिर विश्व-विख्यात "श्री-सूक्त" का १५ बार पाठ करें। इस प्रकार 'तीन मास' उपासना करें। बाद में, नित्य एक बार पाठ करें। विशेष पर्वों पर भगवती का सहस्र-नामावली से सांय-काल 'कुंकुमार्चन' करें। अनुष्ठान काल में ही अद्भुत परिणाम दिखाई देते हैं। अनुष्ठान पूरा होने पर "भाग्योदय" होता है।

माना जाता है की यह स्तोत्र पाठ के बारे में किसी को सुजाव दे और यह स्तोत्र उन्हें देने से भी देनेवाले व्यक्ति को लाभ होने लगता है तो कृपया ज्यादा से ज्यादा लोगो को यह पीडीऍफ़ शेयर करें

आगे स्तोत्र पाठ पढ़ें

॥ श्री सूक्तं ॥

ॐ हिरण्य-वर्णां हरिणीं, सुवर्ण-रजत-स्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं, जातवेदो म आवह॥

तां म आवह जात-वेदो, लक्ष्मीमनप-गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं, गामश्वं पुरूषानहम्॥

अश्वपूर्वा रथ-मध्यां, हस्ति-नाद-प्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये, श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

कांसोऽस्मि तां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीं।
पद्मे स्थितां पद्म-वर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव-जुष्टामुदाराम्।
तां पद्म-नेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥

आदित्य-वर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽक्ष बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥

उपैतु मां दैव-सखः, कीर्तिश्च मणिना सहा
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्, कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे॥

क्षुत्-पिपासाऽमला ज्येष्ठा, अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च, सर्वान् निर्णुद मे गृहात्॥

गन्ध-द्वारां दुराधर्षां, नित्य-पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्व-भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम्॥

मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य, मयि श्रीः श्रयतां यशः॥

कर्दमेन प्रजा-भूता, मयि सम्भ्रम-कर्दमा।
श्रियं वासय मे कुले, मातरं पद्म-मालिनीम्॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि, चिक्लीत वस मे गृहे।
निच-देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

आर्द्रा पुष्करिणीं पुष्टिं, सुवर्णां हेम-मालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो ममावह॥

आर्द्रा यः करिणीं यष्टिं, पिंगलां पद्म-मालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो ममावह॥

तां म आवह जात-वेदो लक्ष्मीमनप-गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरूषानहम्॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा, जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पंच-दशर्चं च, श्री-कामः सततं जपेत्॥